न्यूज डायरी

अमेरिका बोला, ईरान ने रची बदले की खतरनाक साजिश

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) तेहरान। अमेरिकी खुफिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि ईरान अपने ताकतवर जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या का बदला लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका में अमेरिका के राजदूत की हत्या कराना चाहता है। अमेरिकी खुफिया सूत्रों ने बताया कि अमेरिका के राजदूत की हत्या की साजिश का खुलासा ऐसे समय पर हुआ है जब ईरान अमेरिकी हमले का बदला लेने के लिए बेताब है। माना जा रहा है कि अगर ईरान ने इस हमले को अंजाम दिया तो पहले से खराब चल रहे ईरान–अमेरिका के संबंध और ज्यादा बिगड़ जाएगा। साथ ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर ईरान पर पलटवार करने का खतरा बढ़ जाएगा। इससे पूरे पश्चिम एशिया के युद्ध में फंसने का खतरा बढ़ जाएगा। अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि दक्षिणी अफ्रीका में ईरान दूतावास इस पूरे हमले की साजिश में शामिल है।

इजरायल में बढ़ रहा कोरोना वायरस, 21 दिनों तक लॉकडॉउन का ऐलान

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) तेल अवीव। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्ध्याहू ने देश में कोरोना वायरस के तेजी से बढ़ते मामलों को देखते हुए तीन सप्ताह तक के लिए लॉकडॉउन का ऐलान किया है। इस दौरान संक्रमण को रोकने के लिए स्कूल और दुकानों को बंद रखा जाएगा। शुक्रवार से शुरू होने जा रहे इस कोरेाना लॉकडाउन के दौरान इजरायली लोगों के आने–जाने पर प्रतिबंध रहेगा। नेतन्याहू ने कहा, हमारा लक्ष्य कोरोना वायरस को रोकना और संक्रमण की संख्या को कम रखना। मैं जानता हूं कि इन कदमों की हम सभी को बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। यह छुट्टियां नहीं है जिसके आमतौर पर आदी हैं। इजरायल में कोरोना वायरस फैलने के बाद यह दूसरी बार है जब लॉकडाउन लगाया गया है। लॉकडाउन की वजह से कोरोना संक्रमण की दर भले ही कम हो जाती है लेकिन देश की अर्थव्यवस्था और रोजगार पर इसके गंभीर असर पड़ते हैं। उधर, देश में लॉकडाउन लगाने का विरोध भी शुरू हो गया है।

भारत के खिलाफ चीन की खतरनाक साजिश

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) पेइचिंग। लद्दाख में चल रहे तनाव के बीच चीन ने बिना एक भी गोली चलाए भारत पर जीत के लिए एक नई तरह की जंग छेड़ दी है। यह जंग कुछ उसी तरह से है जैसे रूस ने क्रीमिया पर कब्जा करने के लिए किया था। चीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविद , प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत 10 हजार लोगों और संगठनों पर निगरानी रख रहा है। चीन की इस नापाक साजिश में उसका साथी चीनी कंपनी झेन्हुआ डाटा इंफॉरमेशन टेक्नॉलजी कंपनी लिमिटेड दे रही थी। इस चीनी कंपनी ने बिग डेटा की मदद से भारत के खिलाफ हाइब्रिड वॉरफेयर छेड़ रखा है। इंडियन एक्सप्रेस अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक चीन सरकार से जुड़ी हुई कंपनी झेन्हुआ चीन के शेनजेन शहर में स्थित है। इस चीनी कंपनी के विदेशी लक्ष्यों के डेटाबेस में भारत के 10 हजार लोग और संगठन शामिल हैं।

भारत के खिलाफ शी चिनफिंग का आक्रामक कदम अप्रत्याशित रूप से विफल रहा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वाशिंगटन। भारत के खिलाफ चीनी सेना के आक्रामक कदमों के पीछे राष्ट्रपति शी चिनफिंग को जिम्मेदार ठहराते हुए अमेरिका की एक प्रमुख पत्रिका ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया कि चीनी राष्ट्रपति ने भारतीय सीमा क्षेत्र में घुसपैठ का प्रयास करके अपने भविष्य को जोखिम में डाल दिया है क्योंकि यह भारतीय सेना की कड़ी जवाबी कार्रवाई के बाद अप्रत्याशित रूप से विफल रहा। पत्रिका न्यूजवीक ने एक अपने एक लेख में कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी में सुधार आंदोलन और दुश्मनों के उत्पीड़न में पहले से ही उलझे 67 वर्षीय शी भारतीय सीमा पर चीन की नाकामी के बाद कोई अन्य क्रूर कदम उठाएंगे। इसने कहा, यह शी के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है, भारत के खिलाफ आक्रामकता वाले कदमों के वही कर्ताधर्ता हैं और उनकी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) अप्रत्याशित रूप से नाकाम साबित हुई है।

ग्लोबल टाइम्स ने दी धमकी 1962 को याद रखे भारत

जवाहर लाल नेहरू की गलती दुहरा रहे नरेंद्र मोदी

आरोप

- भारत का वर्तमान प्रशासन सीमा पर आक्रामक व्यवहार दिखा रहा है
- चीन का सरकारी प्रोपेगैंडा मीडिया भारत को धमकाने और मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने में जुटा हुआ है

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

पेइचिंग। भारत और चीन के विदेश मंत्रियों के बीच 5 सूत्री सहमति होने के बाद भी चीन का सरकारी प्रोपेगैंडा मीडिया भारत को धमकाने और मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने में जुटा हुआ है। चीनी अखबार ग्लोबल टाइम्स ने चीनी विश्लेषक झांग शेंग के हवाले से दावा किया कि भारत पंडित जवाहर लाल नेहरू की गलती को दोहरा रहा है। उसने कहा कि भारत का वर्तमान प्रशासन सीमा पर आक्रामक व्यवहार दिखा रहा है।

झांग ने कहा कि वर्तमान स्थिति वर्ष 1962 की तरह से ही है। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत अपने हितों के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय की मदद से चीन पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहा है। वर्ष 1962 में चीन सबसे अलग थलग था। उस समय चीन अमेरिका से मुकाबला कर रहा था और उस समय रूस से भी चीन अलग राह पर चल रहा था। जबकि भारत उस समय गुटनिरपेक्ष आंदोलन का अगुवा था।

भारत ने अंतरराष्ट्रीय माहौल का फायदा उठाने की कोशिश की: चीनी विश्लेषक ने आरोप लगाया कि वर्ष 1962 में भारत ने अंतरराष्ट्रीय माहौल का फायदा उठाने की कोशिश की थी। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत ने तीसरी दुनिया के देशों के नेता पदवी भी खो दी।

झांग ने कहा कि भारत की मोदी सरकार भी नेहरू की रणनीति पर काम कर रही और चीन–अमेरिका तनाव का फायदा उठाना चाहती है। उन्होंने कहा कि भारत के रक्षा मंत्री अतिआत्मविश्वास दिखा रहे हैं।

वहीं एक अन्ध्य चीनी विश्लेषक किआंग फेंग ने कहा कि जयशंकर और वांग यी से मुलाकात के बाद अब गेंद भारत के पाले में है। उन्होंने कहा कि अब यह देखना है कि भारत कैसे 5–सूत्री सहमति को लागू करता है। उन्होंने राफेल के शामिल होते समय राजनाथ सिंह के बयान का उदाहरण दिया और कहा कि भारत विरोधाभासी बयान दे रहा है।

चीन भारत को अपना शत्रु नहीं मानता है: कियांग ने दावा किया कि चीन भारत को अपना शत्रु नहीं मानता है और उसके इस रुख में बदलाव नहीं आया है। इसके अतिरिक्त चीन भारत के साथ संबंधों को स्थिर बनाने के लिए व्यवहारिक सहयोग का इच्छुक है। चीन भारत के साथ शांति के साथ सीमा पर विवादों को सुलझाना चाहता है लेकिन अपने हितों के समझौता नहीं करेगा।

इजरायली मॉडल को टैक्स चोरी की अनोखी सजा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) तेल अवीव। इजरायल की टॉप मॉडल बार रेफेली को टेक्स चोरी के मामले में कोर्ट ने अनोखी सजा सुनाई है। कोर्ट ने बार रेफेली को अगले 9 महीनों तक सामुदायिक सेवा करने का आदेश दिया है। जबकि, उनकी मां को 16 महीने की जेल की सजा सुनाई है। 35 वर्षीय रेफेली और उसकी मां पर 10 मिलियन डॉलर की आय पर टैक्स छिपाने का आरोप था। बार राफेल का लियोनार्डो डिकैप्रियो के साथ भी अफेयर रहा है।

9 महीनों तक करनी होगी सामुदायिक सेवा: इस मामले की सुनवाई लंबे समय से जारी थी। जिसमें जुलाई महीने में बार रेफेली और उनकी मां को दोषी करार दिया गया था। कोर्ट ने एक महीने बाद सितंबर में दोषियों को सजा सुनाई। सजा के दौरान तेल अवीव कोर्टहाउस में बार रेफेली के साथ उनकी मां जिपी और पिता रफी भी मौजूद थे। कोर्ट ने जिपी को अगले हफ्ते जेल भेजने का आदेश भी दिया।

राफेली ने किया था यह दावा: इजरायल के कानून के अनुसार, अगर कोई 1 कैलेंडर वर्ष में एक निश्चित दिन इजरायल में नहीं बिताता है तो उसे अपने आय का उल्लेख करना जरुरी नहीं होता है। इसी कारण राफेली ने दावा किया था कि वह अक्सर विदेशों में रही हैं। इसलिए आय की घोषणा करना जरूरी नहीं था।

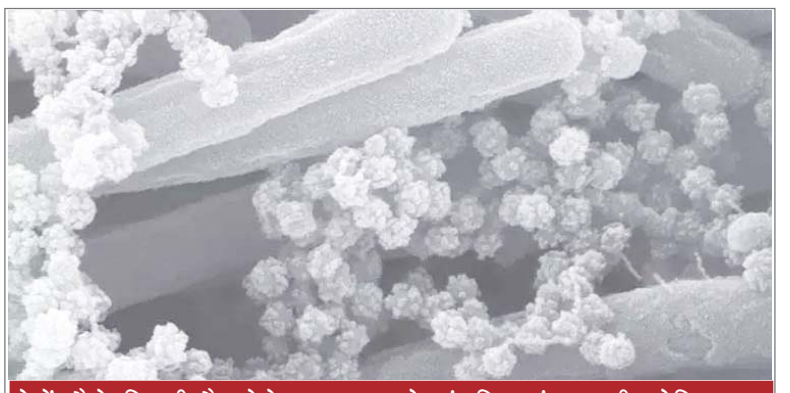

देखें कैसे दिखती है कोरोना वायरस से संक्रमित इंसान की कोशिका

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वॉशिंगटन। कोरोना वायरस से जूझ रही दुनिया के लिए एक अच्छी खबर है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद मानव कोशिकाएं कैसी दिखती हैं, इसकी तस्वीर जारी की है। कोरोना वायरस को लैब में विकसित की गई सांस नली की कोशिकाओं में संक्रमित कराया गया था। इसके बाद वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया कि फेफड़े के अंदर हर कोशिका में कितने वायरस पार्टिकल पैदा हुए। अमेरिका की कैमिली एहरे सहित यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थ कैरोलिना चिल्ड्रेन रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के मुताबिक सांस की नली में कोरोना का संक्रमण कैसे बढ़ता है, इन चित्रों के जरिए आसानी से समझा जा सकता है। तस्वीरों में सांस की नली में बड़ी संख्या में वायरस कण दिखाई पड़ते हैं, जो ऊतकों और अन्य लोगों में संक्रमण फैलाने को तैयार हैं।

जापान के नए प्रधानमंत्री होंगे योशिदे सुगा, बीमार शिंजो आबे की लेंगे जगह

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

तोक्यो। जापान के अगले प्रधानमंत्री योशिदे सुगा होंगे। सूगा निर्वतमान प्रधानमंत्री शिंजो आबे की जगह लेंगे। सुगा ने लंबे समय से शिंजो आबे के साथ काम किया है। जापान में सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के नेतृत्व के चुनाव में योशिदे सुगा को जीत मिली है। आबे के कार्यकाल के दौरान 71 साल के सूगा कई महत्वपूर्ण पद संभाल चुके हैं।

लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य योशिदे सुगा पार्टी में किसी गुट से संबद्ध नहीं रहे हैं। उन्हें ऐसे व्यक्ति के तौर पर देखा जा रहा है जो आबे की नीतियों को आगे बढ़ा सकते हैं। इनमें अमेरिका के साथ जापान का सुरक्षा गठबंधन, कोरोना वायरस महामारी से निपटना और अर्थव्यवस्था को मजबूत करना आदि शामिल है। आबे के बाद की सरकार की अहम नीतियों के बारे में पूछे जाने पर सूगा ने इस बात का जिक्र किया कि कोरोना वायरस महामारी से निपटना सबसे बड़ी चुनौती होगी। जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने स्वास्थ्य कारणों को लेकर कुछ ही दिन पहले पद से इस्तीफा दे दिया था।

मृदुभाषी योशिदे सुगा, जापान में सबसे लंबे समय तक मुख्य कैबिनेट सचिव रहे हैं। वह आबे के नीति समन्वयक एवं सलाहकार रहे हैं। वह प्रधानमंत्री कार्यालय की केंद्रीकृत शक्तियों की धुरी रहे हैं, जिसने नौकराशाहों पर नीतियां लागू करने के लिये जोर दिया। उल्लेखनीय है कि सुगा को अपनी द्वेषपूर्ण प्रतिक्रिया के कारण पिछले साल विरोध प्रदर्शनों का भी सामना करना पड़ा था। दरअसल, एक अखबार के संवाददाता ने आबे की नीतियों की आलोचना पर उनसे कड़े सवाल पूछ दिये थे।

पोप फ्रांसिस ने प्रदर्शनकारियों की मांगें पूरी करने का किया आग्रह

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वेटिकन सिटी। बेलारुस में राष्ट्रपति के खिलाफ हो रहे विरोध–प्रदर्शनों के संदर्भ में पोप फ्रांसिस ने राजनीतिक नेताओं से प्रदर्शनकारियों की मांग सुनकर सामाजिक और राजनीतिक बदलाव करने का आग्रह किया। हालांकि, पोप ने रविवार दोपहर की प्रार्थना सभा में बेलारुस या किसी अन्य देश का नाम नहीं लिया लेकिन उनकी तरफ से यह टिप्पणी वेटिकन के विदेश मंत्री आर्चबिशप पॉल गैलाघर के बेलारुस जाकर चर्च और नागरिक अधिकारियों से मिलने के बाद आयी। फ्रांसिस ने कहा, "मैं प्रदर्शनकारियों से आग्रह करता हूं कि वे आक्रामकता और हिंसा का सहारा लिए बिना शांतिपूर्वक अपनी मांगों को रखें। मैं सभी सार्वजनिक और सरकारी जिम्मेदारी वाले लोगों से अपील करता हूं कि वे अपने साथी नागरिकों की आवाज सुनें और मानव अधिकार और नागरिक स्वतंत्रता के लिए पूरे सम्मान के साथ उनकी मांगें पूरी करें।" पोप ने अमेरिका में नस्लवाद के विरोध में हुए प्रदर्शनों के समर्थन में पहले भी बात की है।